REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 2 | NOVEMBER - 2020

बहुलवाद एवं भारत–श्रीलंका सम्बन्ध

डॉ. मनीष कुमार साव
सहायक प्राध्यापक– राजनीतिविज्ञान,
शास.एम.एम.आर. स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चांपा (छ.ग.)

संदर्भ :–

वर्ष 1948 में आजादी से लेकर अब तक श्रीलंका में लोकतंत्र कायम है। लेकिन श्रीलंका को लगातार एक कठिन चुनौती का सामना करना पड़ रहा है। किसी भी देश की आजादी के बाद लोकतंत्र के समक्ष प्रमुख चुनौती या तो सेना की ओर से या राजतंत्र की ओर से मिलती है। श्रीलंका को आजादी के बाद से ही जातीय संघर्ष का सामना करना पड़ रहा है। जिसकी जड़े वहॉ की जनसांख्यिकी में मौजुद बहुलवाद से संबंधित है। वर्ष 1983 के बाद से अग्रवादी तमिल संगठन लिबरेशन टाईगर ऑफ तमिल ईलम (Liberation Tiger of Tamil Eelam-LTTE) जिसे लिट्टे भी कहा जाता है तथा श्रीलंकाई सेना के बीच सशस्त्र संघर्ष जारी रहा। यहॉ के अल्पसंख्यक मुस्लिमों को गैर मुसलमान बहुसंख्यकों से अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा हैं। हाल ही में श्रीलंका के राष्ट्रपति द्वारा नवीन संविधान का मसौदा पेश करने की घोषणा की गई जो सभी लोगो के लिए एक देश एक कानून की अवधारणा को प्राथमिकता देगा।

श्रीलंका में बहुलवाद की स्थिति :–

श्रीलंका में सामाजिक ताना–बाना विभिन्न जातीय, धार्मिक, भाषाई और सांस्कृतिक समूहों से मिलकर बना है। विभिन्न जातीय समूहों के बीच बहुत स्पष्ट अंतर है। देश की बहुसंख्यक सिंहली आबादी द्वारा बौद्ध धर्म का पालन किया जाता है। अधिकांश तमिल जनसंख्या हिन्दू है और 10प्रतिशत मुसलमान जनसंख्या इस्लाम धर्म का पालन करती है। ईसाई धर्म का पालन सिंहली और तमिल दोनो समुदाय द्वारा किया जाता है। श्रीलंका में धर्म (Religion) तथा नृजातीय (Ethnicity) निकटता से संबंधित है। यद्यपि धर्म ने हमेशा से देश की स्वतंत्र पहचान की राजनीति में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लेकिन धर्म को कभी भी सशस्त्र के प्रत्यक्ष कारण के रूप में नही समझा गया है।

बहुलवाद (Pluralism)

बहुलवाद एक राजनीतिक दर्शन है जो विभिन्न मान्यताओं, पुष्ठभूमि और जीवन शैली के लोगों के सह–अस्तित्व को स्वीकार करता है और राजनीतिक प्रक्रिया में समान रूप से भागीदारी का समर्थन करता है। बहुलवाद में सभी समुदायों को विश्वास मे लेकर निर्णय लेने का समर्थन किया जाता है ताकि पूरे समाज के साझा उद्देश्यों (Common Good) को प्राप्त किया जा सकें। बहुलवाद में अल्पसंख्यक समूहों की स्वीकृति और एकीकरण द्वारा संरक्षित किया जाता है, जैसे कि नागरिक अधिकार कानून।

दक्षिण एशिया में बहुलवाद की स्थिति :–

दक्षिण एशिया के अल्पसंख्यकों में चार प्रमुख वर्ग है :

1. दक्षिण एशिया में धर्म विवाद की एक प्रमुख धुरी रहा है।
2. जातिगत भेदभाव में दलितों का दक्षिण एशिया में सबसे अधिक शोषण हुआ है।
3. दक्षिण एशिया में महिलाओं का धर्मिक, जातिगत, जातीय या भाषाई जल्पसंख्यकों के रूप में दोहरा शोषण हुआ है।
4. दक्षिण एशिया में 50 मिलियन शरणार्थी और राज्य विहीन/स्टेटलेस जनसंख्या का अनुमान है।

अ} अफगानिस्तान में अल्पसंख्यक :– हिन्दु, सिख, शिया और हजारा के साथ ही छोटे जातीय समूहों को विशेष रूप से वंचनाओं का सामना करना पड़ रहा है।

ब} 'चकमा' बौद्ध को मानने वाले है, जबकि हाजोंग हिन्दू है। इन दोनो जनजातियों को बांग्लादेश में कथित तौर पर धार्मिक उत्पीड़न का सामना करना पड़ रहा है।

स} भारत में अल्पसंख्यकों के सामाजिक–आर्थिक अधिकारों के प्रति व्यापक प्रतिबद्धता है, लेकिन यह धार्मिक अधिकारों के संबंध में ज्यादा उदारवादी दृष्टिकोण नही अपनाता है।

द} नेपाल के तराई क्षेत्र के दलित, मुस्लिम, मधेशी और जनजातीय लोग सबसे वंचित वर्गो में से है।

ई} पाकिस्तान में ईसाई, हिन्दू, शिया, अहमदिया अल्पसंख्यकों तथा बलूच पश्तून जातीय अल्पसंख्यकों को भी लक्षित किया जाता है।

श्रीलंका में बढ़ता ध्रुवीकरण :–

सामाजिक ध्रुवीकरण से तात्पर्य समाज से विशेष समूह के अलगाव से है, जो आय असमानता, विस्थापन या किसी अन्य आधार पर हो सकता है। परिणामस्वरूप ऐसे विभिन्न सामाजिक समूह एक साथ किसी विशेष उद्देश्य के लिये एक साथ शामिल होते है, जबकि वे बिल्कुल विपरीत विचारधारा के हो सकते है। श्रीलंका में ध्रुवीकरण के पीछे निम्नलिखित कारण हो सकते है :–

मुस्लिम–तमिल संघर्ष :

श्रीलंका के उत्तरी क्षेत्र में रहने वाले मुसलमान समुदाय के सदियों से तमिलों के साथ अच्छे संबंध रहे थे परंतु वर्ष 1990 में श्रीलंका के उत्तरी भाग से मुस्लिमो की 75,000 की आबादी को तमिलों/लिट्टे द्वारा निष्कासित कर दिया गया तथा इस क्षेत्र में तमिलों को मातृभूमि (Homoland) के एकमात्र प्रतिनिधी के रूप में घोषित किया गया। वर्ष 2009 में जातीय–संघर्ष की समाप्ति के बाद मुस्लिम समुदाय धीरे–धीरे पुनः उत्तरी इलाकों की ओर लौटने लगे परंतु श्रीलंकाई सरकार द्वारा उनके पुनर्वास के लिये कोई सुसंगत योजना नही बनाई गई है। विस्थापिता परिवार को सामाजिक और आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ा है जिसमें आवास सुविधा, भूमि पर दावों और आजीविका के संबंध में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

आतंकवाद और इस्लामोफोबिया :

वर्ष 2012 के अंतराष्ट्रवादी दस्तों द्वारा किये जाने वाले हमलों (Chauvinist Goon Squads) तथा वर्ष 2019 में ईस्टर रविवार के बम विस्फोटों के बाद मुसिलमों को व्यापक तिरस्कार तथा हमला का सामना करना पड़ा है। 11 सितंबर 2001 (9/11) को अमेरिका में हुए आतंकी हमले के बाद शुरू किये गए आतंक पर युद्ध (War on Terror) तथा भारत में हिंदुत्व के मुस्लिम विरोधी सिद्धांतों ने भी श्रीलंका में अराजकतावादी गतिविधियों को बढ़ावा दिया है। मुस्लिमो के खिलाफ होने वाली हिंसा के समय सिंहली और तमिल समुदाय के बीच सहयोग देखने को मिलता है तथा इन समूहों द्वारा चरम राष्ट्रवाद का प्रदर्शन किया जाता है। यहाँ ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि इस्लामोफोबिया (Islamophobia) के कारण न केवल दक्षिण एशिया में अपितु संपूर्ण विश्व में मुस्लिम के खिलाफ इस प्रकार की एकजुटता देखने को मिलती है।

इस्लामोफोबिया में इस्लाम या मुसलमानों के प्रति पूर्वाग्रह या पक्षपात पूर्ण व्यवहार किया जाता है।

राजनीति का प्रमुख हथियार :

ध्रुवीकरण को बढ़ाने में न केवल श्रीलंका की धार्मिक–नृजातिय स्थिति ने योगदान दिया है, राजनीति में भी इसे एक प्रमुख हथियार के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। कोविड–19 महामारी जनित आर्थिक मंदी ने श्रीलंका की राजनीतिक अर्थव्यवस्था को बदल दिया है। वर्तमान समय में सत्तावादी और सैन्यीकृत शासन को राष्ट्रीय समस्याओं के समाधान के लिए एक रामबाण के रूप में देखा जा रहा है ऐसे में उत्तरी इलाकों में मुसलमानों के भविष्य पर संकट और मंडरा सकता है।

श्रीलंका में जातीय संघर्ष और भारत :–

वर्ष 1948 में ब्रिटिश शासन से स्वतंत्र होने के बाद से ही श्रीलंका या तत्कालीन सीलोन को जातीय संघर्ष का सामना करना पड़ा था। सिंहलियों ने औपनिवेशक काल के दौरान तमिलों के प्रति ब्रिटिश पक्षपात का विरोध किया और आजादी के बाद के वर्षो में उन्होने तमिल प्रवासी बागान श्रमिकों को देश से विस्थापित कर दिया तथा सिंहल को अधिकारिक भाषा बना दिया गया। वर्ष 1972 में सिंहलियों द्वारा सीलोन का नाम बदलकर श्रीलंका कर दिया गया और बौद्ध धर्म को राष्ट्र का प्राथमिक धर्म घोषित कर दिया गया। तमिलों और सिंहलियो के बीच जातीय तनाव और संघर्ष बढ़ने के बाद वर्ष 1976 में वेलुपिल्लई प्रभाकरन के नेतृत्व में लिबरेशन टाईगर ऑफ तमिल ईलम/लिट्टे (Liberation Tiger of Tamil Eelam-LTTE) का गठन किया गया और इसने
उत्तरी एवं पूर्वी श्रीलंका, जहॉ अधिकांश तमिल निवास करते थे, में एक तमिल मातृभूमि के लिये प्रचार करना प्रारंभ कर दिया। उवर्ष 1983 में लिट्टे ने श्रीलंकाई सेना की एक टुकड़ी पर हमला कर दिया, इसमें 13 सैनिकों की मौत हो गई। विदित है कि इस घटनाक्रम से श्रीलंका में दंगे भड़क गए जिसमें लगभग 2,500 तमिल लोग मारे गए। इसके पश्चात श्रीलंकाई तमिलों और बहुसंख्यक सिंहलियों के मध्य प्रत्यक्ष युद्ध शुरू हो गया। ध्यातव्य है कि भारत ने श्रीलंका के इस गृहयुद्ध में सक्रिय भूमिका निभाई और श्रीलंका के संघर्ष को एक राजनीतिक समाधान प्रदान करने के लिये वर्ष 1987 में भारत– श्रीलंका समझौते पर हस्ताक्षर किये।

इसके बाद श्रीलंकाई जनता को लगा कि भारत–श्रीलंका के अंदरूनी मामलों में दखलंदाजी कर रहा है उसके बाद वर्ष 1989 में भारत द्वारा अपनी शांति सेना को लक्ष्य हासिल किये बिना ही वापस बुला लिया गया। अंततः सशस्त्र संघर्ष समाप्त हो गया क्योकि वर्ष 2009 में लिट्टे को खत्म कर दिया गया।

बहुलवाद की दिशा में कदम :

श्रीलंका को अपने अतीत के अनुभवों से सीखने और अल्पसंख्यकों की सुरक्षा की दिशा में पर्याप्त कदम उठाए जाने की आवश्यकता है। अल्पसंख्यकों की न केवल उत्तरी श्रीलंका में अपितु आसपास के क्षेत्रों में पर्याप्त सुरक्षा दी जानी चाहिए। अल्पसंख्यक की चिंताओं को दूर करने के लिये उनके आर्थिक कायाकल्प के लिये संसाधनों के वितरण पर विशेष ध्यान केन्द्रीत करने की आवश्यकता होगी, विशेष रूप से एक महान सामाजिक और आर्थिक उथल–पुथल के वर्तमान समय के दौरान। दक्षिण एशियाई देशों को मानवाधिकारों से संबंधित सभी महत्वपूर्ण संधियों की पुष्टि करके अल्पसंख्यक अधिकारों के संरक्षण और संवर्धन के लिये अपनी प्रतिबद्धता को मजबूत करने की आवश्यकता है।

निष्कर्ष :

लगातार संघर्षो की चपेट में होने के बाद भी श्रीलंका ने अच्छी आर्थिक वृद्धि और विकास को हासिल किया है। वर्तमान समय मे श्रीलंका विकास के स्तर तथा जनसंख्या नियंत्रण में एशियाई देशों में अग्रणी है। अतः वर्तमान समय में श्रीलंका को न केवल आर्थिक विकास पर अपितु बहुलवाद पर भी विशेष ध्यान केन्द्रित करने की आवश्यकता है, ताकि एक शांत, समृद्ध तथा अधिक कनेक्टेड दक्षिण एशिया का निर्माण किया जा सकें।

''विविधता में एकता को बनाए रखना ही हमारी सुंदरता और हमारी सभ्यता की असली परीक्षा होगी–
महात्मागॉधी

संदर्भ सूची :–

1} द हिन्दू, 29 नवम्बर 2019
2} भारत ग्लोबल ए आई आर एफ एम गोल्ड प्रोगाम फीचरिंग भारत और श्रीलंका संबंध। https://www.youtube.com/watch
3} इंडियन एक्सप्रेस 14 फरवरी 2020
4} दैनिक जागरण 26 मार्च 2021
5} दृष्टि द विजन 22 Oct. 2020
6} पुष्पेश पंत – 'अंतर्राष्ट्रीय राजनीति' टाटा मेग्राहिल नई दिल्ली, संस्करण 2020